MOHANDAS KARAMCHAND GANDHI- METHODS, PSYCHOLOGY AND EVATUATION OF SATYAGRAHA UG-SEM-V, CC:11

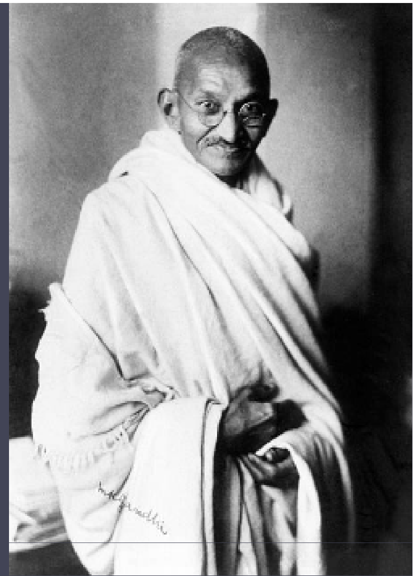

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

जीवन परिचय

मोहनदास करमचन्द गाँधी जी का **जन्म 2 अक्टूबर 1869 में कठियाबाड़ा के पोरबन्दर** नाम स्थान पर हुआ।गाँधी जी की प्रारम्भिक शिक्षा **5 वर्श की आयु में गुजरात के हिन्दी स्कूल में हुई।** तत्पश्चात् 10 वर्श की आयु में उन्हें अंग्रेजी स्कूल में प्रवेश मिला। 13 वर्श की आयु में बिना किसी वैयक्तिक सहमति के **उनका विवाह 1883 में कस्तूरबाबाई से हुआ।** 17 वर्श की अवस्था में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर गाँधी जी ने अपने विद्यार्थी जीवन के उच्चतम आदर्शों का परिचय दिया। **4 सितम्बर 1882 को गाँधी जी ने बैरस्ट्री पास करने के लिए विलायत (इंग्लैंड) प्रस्थान किया** और उसके बाद बैरस्ट्री पूर्ण कर वे भारत लौटे। **16 वर्श की छोटी सी उम्र में पिता का साया उठ जाने के पशत् भी** गाँधी जी ने देश–विदेश में अपना अध्ययन जारी रखा। **मात्र 22 वर्श के थे, बैरिस्ट्री पास कर इसी वर्श से मुम्बई के कठियावाड के वकालत शुरू की।** जहाँ निवासित एक व्यापारी दक्षिण अफ्रिका में व्यापार करते थे। उन्होंने अपने मुकदमे की पैरवी के लिए **1893 में गाँधी जी को दक्षिण अफ्रिका भेजा।**

- लगभग **20 वर्शों तक अफ्रिका में रहकर अहिंसात्मक सत्याग्रह** के आन्दोलन का सर्वप्रथम प्रयोग किया, इस सारी प्रक्रिया में उन्हें **7 दिन व चौदह दिन का दो बार उपवास** रखना पड़ा और दो बार जेल भी जाना पड़ा। **सन् 1915 में देश के नेता के रूप में भारत लौटे।** भारत में अंग्रेजी सरकार की नीति के खिलाफ, सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया और देशवासियों को देश की स्वतंत्रता के लिए संगठित करने का शक्तिशाली अभियान प्रारम्भ किया। विदेशी सामाग्री का बहिश्कार, अंग्रेजी कानूनों का विरोध राश्ट्रहित के लिए उपवास एवं अनशन जेल यात्राएँ कर देश की आजादी उनके जीवन का लक्ष्य बन गयी, और **1920 में उनका सक्रिय राजनैतिक जीवन प्रारम्भ हो गया।** असहयोग आन्दोलन, स्वतंत्रता, स्वाधीनता एवं भारतीयों में नवजीवन संचार करने के लिए चर्खा, खादी का प्रचार किया। **'यंग इण्डिया तथा 'नवजीवन' पत्रों का सम्पादन, हरिजन संघ की स्थापना** कर गतिविधियों में वृद्धि की।

- 1942 में भारत छोड़ा का नारा बुलंद कर अंग्रेजों से भारत को मुक्त कराने की दृढ इच्छा से 15 अगस्त 1947 में देश की आजादी में अहम् भूमिका का निर्वाह् किया, लेकिन स्वतंत्र भारत में गाँधी जी अधिक सांस न ले सके और **30 जनवरी 1948 ई0 को नाथूराम गोडसे द्वारा उनकी हत्या कर दी गयी।** गाँधी जी के जीवन का अध्ययन करने से स्पश्ट होता है कि उनका सम्पूर्ण जीवन आन्दोलनों से भरा पड़ा या ये कहा जाए कि उनका जीवन अत्याचार के विरुद्ध आन्दोलनों का इतिहास रहा है।

सत्याग्रह का अर्थ (Meaning of Satyagrah)

- सत्याग्रह दो शब्दों से मिलकर बना है– **सत्य और आग्रह**। अर्थात् सत्य का आग्रह करना, **सत्य पर दृढ़ रहना ही सत्याग्रह है,**

सत्याग्रह की विधियाँ (Methods of satyagrah)

गाँधी जी सत्याग्रह में जिन विधियों का उल्लेख किया गया है, वे इस प्रकार हैं–

- हड़ताल
- उपवास
- प्रार्थना
- प्रतिज्ञा
- असहयोग
- करबन्दी
- धरना
- सविनय अवज्ञा
- अहिंसक धावे
- आमरण अनशन
- अपनी इच्छा से सरकारी सीमा छोड़ना।

सत्याग्रह का मनोविज्ञान
(Psychology of satyagarh)

सत्याग्र को मानव समाज की अएक मनोवैज्ञानिक अवस्था माना जाता है। मनुश्य में पायी जाने वली मूल प्रवृत्तियों को प्रमुख रूप से दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

- सद्प्रवृत्ति या दैवी प्रवृत्ति
- असद् या दानवी प्रवृत्ति

सद्प्रवृत्ति या दैवी प्रवृत्ति

- गाँधी जी का विचार था कि यदि हम मनुश्य का विश्लेशण करें तो स्पश्ट हो जाता है कि वह सद्प्रवृत्तियों का प्राणी है। जिसमें देवत्व के गुण विद्यमान होते है। जो मनुश्य के अन्दर स्वभाविक रूप से विद्यमान देवत्व की प्रवृत्ति को जाग्रत करता है। इसमें व्यक्ति का स्वभाव व आत्मा अन्याय से न्याय की ओर, असत्य से सत्य की ओर, दानव से देवत्व, घृणा से प्रेम तथा स्वार्थ से परार्थ की ओर अग्रसारित होता है। सत्याग्रह व्यक्ति में सद्प्रवृत्ति को जाग्रत करने की कला है।

असद् या दानवी प्रवृत्ति

- गाँधी जी के अनुसार, यदि मनुष्य में असद् प्रवृत्तियाँ होती हैं, तो सम्पूर्ण संसार में युद्ध और संघर्श की स्थिति उत्पन्न हो जाती और मानव समाज नश्ट हो गया होता। अन्याय, असत्य, घृणा, स्वार्थ, दानवता का सर्वत्र बोलबाला होता और समाज अव्यवस्थित हो जाता।

- अतः गाँधी जी मानते थे कि सत्याग्रह का सिद्वान्त व्यक्ति की मानवीय प्रवृत्तियों को सत्यप्रिय, न्यायप्रिय, परार्थी और अहिंसक बनाता है, जिसे एक वैज्ञानिक व मनोवैज्ञानिक आधार कहा जा सकता है। सारांश रूप में कहा जा सकता है कि सत्याग्रह का तात्पर्य सत्य के आग्रह से है। जो व्यक्ति सत्य के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने को भी तैयार रहता है, वहीं वास्तविक सत्याग्रही है। सत्याग्रह में प्रेम, स्नेह, सदाचरण, न्याय, परार्थी, सत्य, अहिंसा की प्रक्रिया को अपनाया जाता है, जिससे न केवल व्यक्ति, बल्कि सम्पूर्ण समाज, देश व राश्ट्र भी विकसित होता है।

सत्याग्रह का मूल्यांकन (Evaluation of Satyagarh)

गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित सत्याग्रह के सिद्वान्त का मूल्यांकन निम्नवत् किया जा रहा है–

- व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में महत्व (Importance of Indivisual and social life)
- समाज का पुर्ननिर्माण (Reconstruction of society)
- सामाजिक अनुशासन व नैतिकता में वृद्धि
- मानवता के प्रति प्रेम (Love for humanity)

व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में महत्व (Importance of Indivisual and social life)

- सत्याग्रह के प्रमुख तत्वों, विशेशताओं के आधार पर माना जा सकता है कि यदि व्यक्ति इनका अनुसरण करेगा, या जीवन में इन्हें आमसात् करेगा तो न केवल व्यक्ति के स्वयं के जीवन में, बल्कि सम्पूर्ण समाज में इसका महत्व होगा।

समाज का पुर्ननिर्माण (Reconstruction of society)

- सत्याग्रह के सिद्धान्तों को जीवन में लागू कर व्यक्ति नकारात्मक से सकारात्मक प्रवृत्ति की ओर अग्रसारित होता है। गाँधी जी द्वारा वर्णित नये व नैतिक विचारों के आधार पर समाज का पुर्ननिर्माण भी संभव है।

सामाजिक अनुशासन व नैतिकता में वृद्धि

- अनुशासन व संयम सक्षम व्यक्तित्व व सामाजिक व्यवस्था के लिए आवश्यक है, जिसकी सहायता से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में व्याप्त दुश्परिणामों को समाप्त किया जा सकता है।

मानवता के प्रति प्रेम (Love for humanity)

- सत्याग्रह एक ऐसा सिद्धान्त जिसमें मानवता के प्रति प्रेम के दर्शन होते हैं, जिससे समाज में स्नेह एवं सहयोग की भावना विकसित होती है और इस प्रकार समाज की प्रगति को प्रोत्साहन मिलता है।
- अतः स्पश्ट है कि गाँधी जी में सौजन्यता, नमग्रता, सत्य व अहिंसा के प्रति अटल विश्वास था, इसीलिए उन्होंने विश्व को विशेशकर भारत को सत्याग्रह के आधार पर नया मार्ग दिखलाया। **श्रीमन्ननारायण ने लिखा है–'सत्याग्रह की बुनियाद भी साधन भाुद्धि।'** गाँधी जी को यह विश्वास था कि हमको हमारा शुद्ध साध्य अशुद्ध व अपवित्रसाधनों द्वारा कभी प्राप्त नहीं हो सकता। उनके अनुसार– **''जैसे साधन होंगे वैसे ही साध्य होंगे, जैसा बीज वैसा ही वृक्ष होंगे।''**

समाजशास्त्र के सिद्धान्त के अंतर्गत सत्याग्रह का अध्ययन किया जाता है। इसका कारण है कि समाज सामाजिक संबंधों की एक व्यवस्था है और सत्याग्रह इन्हीं संबंधों में मधुरता व अनुकूलता को विकसित करता है। यद्यपि सत्याग्रह का प्रयास गांधी जी ने व्यक्तिगत जीवन में किया था, लेकिन इसका संबंध केवल व्यक्ति तक सीमित न होकर एक सार्वज्ञानिक व व्यवहारिक सिद्धान्त के रूप में सामाजिक जीवन में भी है। सत्याग्रह की प्रक्रिया को अपनाकर समाज में व्याप्त असत्य, अन्याय, शोशण को समाप्त किया जा सकता है तथा सहयोग, सहकारिता, सद्भाव जैसी भावनओं को विकसित कर सामाजिक व्यवस्था को एक व्यवस्थिति रूप प्रदान किया जा सकता है। सामाजिक जीवन इन्हीं महान सिद्धान्तों पर टिका हुआ है जो व्यक्तिगत जीवन की अपेक्षा सामाजिक व राश्ट्रीय जीवन में प्रयोग किया जा सकता है। सत्याग्रह केवल सिद्धान्त की बात नहीं है, अपितु गाँधी जी ने इसका व्यवहारिक जीवन में भी प्रयोग किया है और पाया है कि इसकी सहायता से अन्याय व प्रतिकार को भी समाप्त किया जा सकता है। इस सिद्धान्त की मौखिक बात यह है कि इसका प्रयोग अन्तर्राश्ट्रीय स्तर पर भी किया जा सकता है।